



# बिहार गजट

## असाधारण अंक

### बिहार सरकार द्वारा प्रकाशित

12 आषाढ़ 1936 (श0)

(सं0 पटना 562) पटना, बृहस्पतिवार, 3 जुलाई 2014

जल संसाधन विभाग

अधिसूचना

19 मई 2014

सं0 22/नि0सि0(मोति0)-08-08/2007/583—श्री रामानुज सिंह, तत्कालीन सहायक अभियन्ता, ढाका नहर नवीकरण अवर प्रमण्डल, गोआवारी के वर्ष 2004-05, 2005-06 एवं 2006-07 में ढाका नहर नवीकरण प्रमण्डल, ढाका के कराए गए गेटों की मरम्मत कार्य एवं लकड़ी के संधारित लेखा की जाँच उड़नदस्ता अंचल से कराई गई। उड़नदस्ता से प्राप्त जाँच प्रतिवेदन की समीक्षोपरान्त श्री सिंह से स्पष्टीकरण की मांग की गई। प्राप्त स्पष्टीकरण की समीक्षा विभागीय स्तर पर की गई एवं निम्नांकित आरोप प्रथम दृष्टया प्रमाणित पाए गए:-

1. नहर के वीयर एवं शीर्ष गेटों की मरम्मत का स्थायी निदान न कर विभागीय शीशम की लकड़ी का प्रावधान प्रत्येक वर्ष खरीफ एवं रबी सिंचाई के पूर्व गेट मरम्मत के प्राक्कलन में करते हुए लकड़ी की खपत की गई जो विभागीय नियमों के प्रतिकूल है।

2. दिनांक 24.8.06 को हस्तपावती पर लकड़ी का हस्तान्तरण किया गया जिसे थाना द्वारा जब्त कर लिया गया परन्तु श्री सिंह द्वारा 24.8.06 को जब्त की गई लकड़ी की सूचना अपने उच्चाधिकारियों को ससमय नहीं दी गई। साथ ही जाँच दल को इससे संबंधित कोई अभिलेख भी उपलब्ध नहीं कराया गया।

उक्त प्रथम दृष्टया प्रमाणित आरोपों के लिए विभागीय संकल्प ज्ञापांक 478 दिनांक 19.4.11 द्वारा श्री रामानुज सिंह, तत्कालीन सहायक अभियन्ता ढाका नहर नवीकरण अवर प्रमण्डल, गोआवारी के विरुद्ध बिहार सरकारी सेवक (वर्गीकरण, नियंत्रण एवं अपील) नियमावली 2005 के नियम 17 के तहत विभागीय कार्यवाही संचालित की गई।

संचालन पदाधिकारी के समक्ष अपने बचाव बयान में आरोपित पदाधिकारी द्वारा आरोप सं0-1 के संबंध में बताया गया कि गोआवारी वीयर का निर्माण वर्ष 1908 में कराया गया था एवं वीयर गेटों तथा शीर्ष गेटों की स्थिति उपयुक्त नहीं रहने के कारण पूर्व से ही गेटों की मरम्मत कराकर नहर में जल प्रवाह कराया जाता रहा है। लगड़ी के फाटक के स्थान पर लोहे का गेट लगाते हुए शीर्ष नियामक में स्थायी रूप से उतोलन की व्यवस्था के संबंध में उच्चस्तरीय समिति के गठन हेतु मुख्य अभियन्ता, बाल्मीकिनगर के पत्रांक 1031 दिनांक 12.7.07 द्वारा अभियन्ता प्रमुख (उत्तर) से अनुरोध किया गया था। इसका निर्णय विभाग से अपेक्षित था।

सिंचाई हस्तक भाग-2 के पृष्ठ 15-17 एवं 584 में गोआवारी वीयर के गेटों की लकड़ी से मरम्मत कराने का उल्लेख है। स्पष्टतः सिंचाई कार्य की प्राथमिकता को ध्यान में रखकर विभागीय सक्षम पदाधिकारी की स्वीकृति के पश्चात ही लकड़ी से गेटों की मरम्मत कराने का कार्य कराया जाता रहा है।

श्री सिंह द्वारा आरोप सं०-2 के संबंध में अपने बचाव बयान में बताया गया कि तत्कालीन अधीक्षण अभियन्ता एवं तत्कालीन कार्यपालक अभियन्ता से प्राप्त निदेश के क्रम में अवर प्रमण्डल, ढाका के पत्रांक 191 दिनांक 24.7.06 के आलोक में श्री शमीम अहमद, कनीय अभियन्ता को गोआवारी वीयर के संचालन हेतु फाटों की मरम्मत के लिए लकड़ी प्राप्त करने का निदेश प्राप्त हुआ। तत्पश्चात श्री शमीम अहमद, कनीय अभियन्ता द्वारा दिनांक 24.8.06 को हस्तपावती पर लकड़ी लेने के क्रम में थाना में लकड़ी जब्त होने की सूचना पाकर उनके द्वारा थाना प्रभारी से सम्पर्क कर आवश्यक कागजात दिखाते हुए लकड़ी छोड़ने का आग्रह किया गया। थाना प्रभारी द्वारा अभिरुचि नहीं लेने पर धटना की विस्तृत जानकारी एवं थाने में की गई कार्रवाई की सूचना दूरभाष एवं व्यक्तिगत रूप से कार्यपालक अभियन्ता एवं अधीक्षण अभियन्ता को दिया गया।

कार्यपालक अभियन्ता के माध्यम से सभी वांछित अभिलेख उनके पत्रांक 394 दिनांक 8.6.07 द्वारा जॉच दल को उपलब्ध करा दिया गया था।

संचालन पदाधिकारी से प्राप्त जॉच प्रतिवेदन में उनके मंतव्य में उल्लेख किया गया है कि पूर्व से चालू प्रक्रिया के अन्तर्गत कार्रवाई की गई। नीतिगत परिवर्तन के अन्तर्गत लकड़ी कपाट की व्यवस्था के अलावे विकल्प के रूप में अन्य व्यवस्था करने का नियंत्रणकारी स्तर से किसी अनुदेश का अभिलेख नहीं है। सहायक अभियन्ता के स्तर से लकड़ी की खपत पूर्व से चली आ रही व्यवस्था के तहत की गई। अतः आरोप नहीं बनता है।

लकड़ी जब्ती की धटना का लिखित संसूचन का कोई अभिलेख उपलब्ध नहीं कराया गया है एवं अन्य श्रोतो से भी कोई लिखित संसूचन देने का जिफ्र नहीं है। मात्र उच्चाधिकारियों को ही मौखिक रूप से ही अवगत कराया गया। इस संवेदनशील मामले में लिखित संसूचन श्रेयस्कर होता। यह दायित्व निर्वहन अपेक्षित था।

कार्यपालक अभियन्ता के माध्यम से अभिलेखों को उड़नदस्ता जॉच दल के समक्ष उपस्थित किया गया। अतएव अभिलेख उपलब्ध नहीं कराने का कोई मामला नहीं बनता है।

संचालन पदाधिकारी से प्राप्त जॉच प्रतिवेदन की सरकार के स्तर पर समीक्षा की गई। समीक्षा के क्रम में यह पाया गया कि आरोपित पदाधिकारी श्री सिंह की गेटों की मरम्मत के स्थायी निदान पर नीतिगत निर्णय में इनकी कोई सहभागिता नहीं है तथा पूर्व की प्रक्रिया के तहत गेटों की मरम्मत कार्य में लकड़ी की खपत स्वीकृत कार्यक्रम एवं प्राक्कलन के तहत किया गया है। इसके आधार पर श्री सिंह के विरुद्ध आरोप सं०-1 प्रमाणित नहीं होता है।

आरोप सं०-2 के संबंध में श्री सिंह के बचाव बयान एवं संचालन पदाधिकारी के मंतव्य से विदित होता है कि दिनांक 24.8.06 को गोआवारी वीयर एवं शीर्ष गेटों की मरम्मत हेतु हस्तपावती रसीद पर लकड़ी लेने के क्रम में थाना द्वारा लकड़ी जब्त किया गया तथा श्री सिंह द्वारा थाना प्रभारी से सम्पर्क स्थापित कर लकड़ी छोड़ने का प्रयास किया गया तथा उसकी सूचना मौखिक रूप से कार्यपालक अभियन्ता को दी गई। कार्यपालक अभियन्ता के पत्रांक-58 शि० (मोति०) दिनांक-06.09.2006 में भी उल्लेख किया गया है कि सम्बन्धित अवर प्रमण्डल पदाधिकारी द्वारा भी थाना प्रभारी, ढाका से सम्पर्क स्थापित कर वस्तुस्थिति की पूर्ण जानकारी दी गई। फिर भी श्री सिंह को लिखित रूप से मामले की जानकारी उच्च पदाधिकारी को देनी चाहिए थी। आरोपित पदाधिकारी श्री सिंह द्वारा बचाव-बयान के साथ ऐसा कोई साक्ष्य उपलब्ध नहीं कराया गया है जिससे प्रमाणित हो सके कि थाना में जब्त लकड़ी की सूचना लिखित रूप से उच्चाधिकारी को दी गई हो जिसके लिए वे दोषी हैं।

उड़नदस्ता जॉच दल के मंतव्य कण्डिका एवं निष्कर्ष कंडिका 4.00 में अभिलेख उपलब्ध नहीं कराने पर कोई प्रतिकूल टिप्पणी दर्ज नहीं है। अतएव अभिलेख उपलब्ध नहीं कराने का आरोप प्रमाणित नहीं होता है।

मामले की सम्यक् समीक्षोपरान्त श्री रामानुज सिंह, तत्कालीन सहायक अभियन्ता, ढाका नहर नवीकरण अवर प्रमण्डल, गोआवारी के विरुद्ध थाना द्वारा जब्त लकड़ी की सूचना अपने उच्चाधिकारियों को ससमय नहीं देने के प्रमाणित आरोप के लिए निम्नांकित दण्ड देने का निर्णय जल संसाधन विभाग, बिहार द्वारा लिया गया है :-

1. असंचयात्मक प्रभाव से तीन वेतनवृद्धि पर रोक।

उक्त निर्णय के अनुपालन में श्री रामानुज सिंह, तत्कालीन सहायक अभियन्ता, ढाका नहर नवीकरण अवर प्रमण्डल, गोआवारी को निम्न दण्ड संसूचित किया जाता है।

1. असंचयात्मक प्रभाव से तीन वेतनवृद्धि पर रोक।

बिहार-राज्यपाल के आदेश से,  
गजानन मिश्र,  
विशेष कार्य पदाधिकारी।

अधीक्षक, सचिवालय मुद्रणालय,

बिहार, पटना द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

बिहार गजट (असाधारण) 562-571+10-डी०टी०पी०।

Website: <http://egazette.bih.nic.in>